Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ

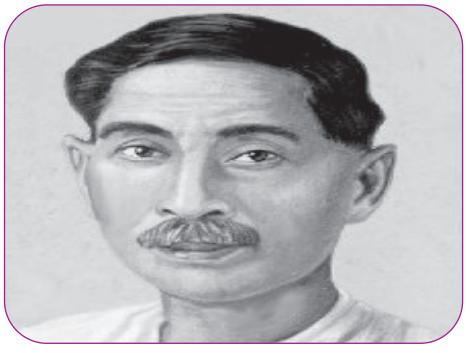

डॉ. मनोज आर. पटेल
आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद , गुजरात.

प्रस्ताविक

19 वीं सदी में स्वामी दयानदं, राजाराम मोहन राय जैसे अनेक समाज सुधारकों ने प्रार्थना समाज, आर्य समाज, ब्रह्म समाज के द्वारा नारी पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार और परंपरा से चली आई कुप्रथाओं को समाज से मिटाने का प्रयत्न किया । इसका परिणाम उस समय के साहित्यकारों पर भी दिखाई देता है । नारी के प्रति गहरी सहानुभूति ज्यादात्तर द्विवेदी युग में दिखाई देती है । उस समय के साहित्यकार नारी के प्रति सहानुभूति तो प्रकट करते हैं, किंतु उनके साहित्य में नारी को सम्मान नहीं मिला । प्रेमचंद नारी को सहज, मानवीय प्रतिष्ठा दिलाना चाहतें है । इस कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी के वास्तविक जीवन में व्याप्त समस्याओं का चित्रण किया है । उनके उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ इस प्रकार से हैं .

सेवासदन (1916)

वेश्या समस्या - वेश्या समस्या यह सेवासदन की मुख्य समस्या है । समाज द्वारा या परिवार द्वारा किए जानेवाले अन्यायों से नारी किस प्रकार वेश्या बनती है इसका चित्रण सुमन के माध्यम से किया गया है । सुमन एक शिक्षित, मध्यमवर्गीय लडकी होने के बावजूद भी अपने पति द्वारा तिरस्कृत है । वह अपने पति के मुख से सदव भोली वेश्या के कौतुक के शब्द सुनती है । उसे भोली से इर्षा होने लगती है । अपने पति से मिलनेवाले तिरस्कार के बदले में वह उस सुखमय जीवन के संबंध में सोचने लगती जिसे वेश्या कहते हैं । लेकिन उस प्रकार के दु:खमय जीवन को याद कर वह कती है, "अब उस सुखमय जीवन के मार्ग में बाधा न थी । लेकिन जिस प्रकार बालक किसी गाय या बकरी को दँर से देखकर प्रसन्न होता है, पर उसके निकट आते ही भय से मुँह छिपा लेता है, उसी प्रकार सुमन अभिलाषाओं के द्वार पर पहुँचकर भी प्रवेश न कर सकी । लज्जा, खेद, धृणा, अपमान ने मिलकर जैसे उसके पैरों में बेडी.सी डाल दी ।"[1]

इस प्रकार का विश्वास करके भी पति द्वारा और समाज द्वारा अविश्वास दिखाने पर वह वेश्या बन जाती है । जीवन के अंत तक वह अपने इस पेशे से वफादारी नहीं करती । इस बात की वेदना उसे हर वक्त सताती है । वह अपने वेश्या बनने के लिए मायके की आर्थिक परिस्थिति और पति के साथ हुए अनमेल विवाह को जिम्मेदार ठहराती है ।

दहेज की समस्या . वैदिक काल में विवाहोपरांत कन्या के साथ कुछ देने की प्रथा रही है । यह माता.पिता द्वारा पुत्री को स्वेच्छा से दिया जाता था, जिससे ससुराल में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे । कुछ समय के पश्चात इसमें परिवर्तन आ गया । अतिथियों का मान.सम्मान करना ही महत्वपूर्ण था । शिष्टाचार के तौर पर वर पक्ष वधू.पक्ष को और वधू.पक्ष वर पक्ष को कोई भेट प्रदान करते थे । लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिता की जायदाद में कन्या का अधिकार हो जाने के कारण इस प्रथा में प्रेम नहीं रहा । इसमें सिर्फ लेन.देन की व्यावसायिकता रह गई थी । प्रेमचंद युग में भी यह समस्या बडी.ही जटिल बन गई थी । इस समस्या के कारण कितनी ही लडकियों को अनमेल विवाह का सामना करना पडा । सुमन को भी अपने पिता की मृत्यु के बाद उसके मामा के पास आश्रय लेना पडा । अपने आर्थिक अभाव के कारण गजाधर नामक एक सामान्य मनुष्य से विवाह करना पडता है । इस अनमेल विवाह के कारण कई आर्थिक समस्याएँ निर्माण होती हैं, जिनके दबाव से पति.पत्नी में तनाव निर्माण होता है और अंत में सुमन वेश्या बन जाती है ।

प्रेमाश्रम (1922) :

विधवा.विवाह की समस्या - प्रेमचंद ने इस उपन्यास में विधवा.विवाह समस्या को व्यक्त किया है । इस उपन्यास की पात्र गायत्री एक त्यागी, दानशील और कर्तव्यदक्ष नारी है । वह विधवा है । विधवा होने पर भी वह अपने पति से एकनिष्ठ है । अकस्मात उसका जीजा ज्ञानशंकर उसके जीवन में प्रेम का दीपक जला देता है । गायत्री उसकी ओर आकर्षित होती है । फिर भी अपने आप को संयमित कर अपना सारा ध्यान राजकाज में लगाती है । किंतु नारी.सुलभ भावनाएँ और ज्ञानशंकर की आत्मीयता के कारण, वह ज्ञानशंकर से प्रेम करने लगती है । वह अपने संयमित जीवन को याद कर आत्मग्लानी में कहती है, "मुझे मेरे अहंकार ने डुबाया, मैं अपने ख्याति अपने प्रेम के हाथों मारी गयी ।

मेरा वह धर्मानुराग, मेरी वह विवेकहीन मिथ्या भक्ति, मेरे वह अमोद.प्रमोद, मेरी वह आवेशमयी कृतज्ञता जिस पर मुझे अपने संयम और व्रत को बलिदान करने में लेशमात्र भी संकोच न होता था, केवल मेरे अहंकार की क्रीडाएँ थीं । उस व्याध्र ने मेरी प्रकृति के सबसे मेद्य स्थान पर निशाना मारा । उसने मेरे व्रत और नियम को धूल में मिला दिया । केवल अपने ऐश्वर्य.प्रेम के हेतु मेरा सर्वनाश कर दिया ।"[2]

गायत्री के इस आत्मग्लानि से विधवा को समाज तथा परिवार के लोग किस प्रकार से अपने अनुसार नचाते हैं, यह स्पष्ट होता है । गायत्री के पिता जब उसके उच्छृखल व्यवहार से नाराज होते हैं, तो उनका विरोध विरोध करते हुए कहती है, "पिताजी उनसे नाराज हैं तो हुआ करें मुझे इसकी चिंता नही । में क्यों प्रेम नीति से मुँह मोडूँ ? प्रेम का संबंध केवल दो हृदयों से हैं, किसी तीसरे प्राणी कोउसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं ।..... वह प्रेम के गूढाशय क्या जानें ? उन्हें इस पवित्र मनोवृत्ति का क्या ज्ञान ?"[3]

वह अपने पिता और समाज की परवाह नहीं करती । पिता के निराशा के कारण ओर ज्ञानशंकर के छलकपट के कारण वह संसार से विरक्त होना चाहती है । लेकिन आत्मसंयम आर इंद्रिय.निग्रह करने पर भी सांसारिक चिंताएँ सताती रहती हैं । गायत्री विव्हल होकर अपनी मुक्ति के लिए ऊँची पहाडी पार कर एक स्वामीजी के यहाँ जाती है, लेकिन उनका चेहरा देखकर उसका दुःखी हृदय अधिक क्रंदन करने लगता है । "ऐसा जान पडा, मानो मैं तेज तरंगो में बही जाती हँ । हा! मैं इस विशाल आत्मा की पुत्री ग्लानि ने कहा, हा पतिता! लज्जा ने कहा, हा कुलकलंकिनी ! निराशा बोली, हा अभागिनी! शोक ने कहा, हा धिक्कार ! तू इस योग्य नहीं कि संसार को मुँह दिखाये । अधःपतन अब क्या शेष है, जिसके लिए जीवन की अभिलाषा ।"[4]

अपने आप में उत्पन्न ग्लानि के कारण वह पहाड से गिरकर अपनी जान देती है । गायत्री के माध्यम से प्रेमचंद ने विधवा स्त्री को किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं होते, समाज की परंपराओं के कारण उसे अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने का अधिकार नहीं होता, यही स्पष्ट किया है ।

निर्मला (1923)

दहेज की समस्या – निर्मला उपन्यास की यह मुख्य समस्या है । इस समस्या की शिकार हुई निर्मला अपने जीवन में अंत तक संघर्ष करती हुई नजर आती है । अपने पिता की मृत्यु के बाद वह आर्थिक स्थिति से कमजोर होती है । उसकी माता के कितने ही अनुनय. विनय से भी उसके ससुरालवाले विवाह के लिए तैयार नहीं होते । आर्थिक विपन्नता के कारण उसकी माता उसका विवाह एक दुहाजु से करती है । इस विवाह से उसकी सारी मनोकामनाएँ भंग हो जाती हैं । जब वह नववधू बनकर अपने नये घर में प्रवेश करती है, तभी से उसके जीवन की शांति नष्ट हो जाती है । प्रेमचंद ने निर्मला के माध्यम से दहेज प्रथा से एक नवयुवती के इच्छाओं, अभिलाषाओं का किस प्रकार से सर्वनाश होता है और ये लडकियाँ किस प्रकार से इस समस्या का शिकार होती हैं यह दर्शाया है । अपने अंत समय में भी वह अपनी बच्ची के लिए चिंतित है । वह कहती है, "दादाजी अब मुझे किसी वैद्य की दवा फायदा न करेगी । आप मेरी चिंता न करें बच्ची को आपके गोद में छोड जाती हँ । अगर जीती.जागती रहे तो किसी अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा । मैं तो इसके लिए अपने जीवन में कुछ न कर सकी, केवल जन्म देने की अपराधिन हँ । चाहे क्वांरी रखियेगा, चाहे विष देकर मार डालियेगा, पर कुपात्र के गले न मढियेगा, इतनी ही आपसे विनय है ।"[5]

गबन (1931)

नारी की आभूषण प्रियता की समस्या - नारी की प्रवृत्ति की विशेषता है कि वह बचपन से ही आभूषणों के प्रति आकर्षित होती है । उसकी यह आभूषण प्रियता सामंती समाज व्यवस्था के कारण उत्पन्न हुई है, जिसमें स्त्री के रमणी रूप को ही अधिक माना है । प्राचीन काल में भी स्त्रियाँ अपने सौंदर्य को बढाने के लिए फूलों के हार बनाकर पहन लेती थीं । बाद में उन फूलों की जगह धातुओं ने ले ली । इन धातूओं के द्वारा बनाए गए आभूषणों से अपने सौंदर्य को बढाने लगी । आज ऐसी स्थिति है कि, गहनों के बगैर नारी अपने आप को प्रतिष्ठित कुल की समझती ही नहीं । गबन उपन्यास की जालपा भी अपने आभूषण प्रेम को छिपा नहीं पाती । बचपन से ही उसे आभूषणों के प्रति आकर्षण रहा है । बचपन में जहाँ बालक अपने खिलौनों से खेलता हैं, वहीं पर जालपा आभूषणों के साथ खेलती रही है । उसे आभूषणों के प्रति तीव्र आकर्षण है । उसे चंद्रहार की चाह है । विवाह में भी उसकी यह चाह पूरी नहीं होती । विवाह के बाद जालपा की आभूषण प्रियता की साध को पूरा करने के लिए रमानाथ रुपयों का गबन करता है । अपने जुर्म से बचने के लिए वह परिवार से दँर भागकर जाता है । पति के घर से चले जाने के बाद जालपा अपने आभूषणों को गबन के रुपये वापस लौटाने के लिए अपने ससूर के पास देती है । जालपा को इस बात की अत्यधिक कचोट है कि, उसका पति उसे केवल रमणी ही समझता हैं, सुख.दुःख की साथिन नही समझता । इस बारे में वह अपने पति से बार. बार कहती है कि, "मैं वेश्या नहीं कि तुम्हें नोच.खसोट कर अपना रास्ता लूँ । मुझे तुम्हारे साथ जीवना और मरना है । अगर मुझे सारी उम्र बेगहनों के रहना पडे, तो भी मैं कर्ज लेने को न कहँगी ।"[6]

अपने पति के घर से चले जाने के कारण वह असहाय नही होती, बल्कि कठिनाइयों का सामना करती है, उनसे जूझती है । जालपा के आभूषणों के प्रति लगाव के कारण उसकी सुखमय जिंदगी में हलचल मच जाती है । उसे पतिवियोग को सहना पडता है । साथ ही सास की व्यंगोक्तियाँ भी सुननी पडती हैं । अपनी आभूषण प्रियता के कारण उसे वह सब कुछ सहना पडता है । उसकी आभूषण प्रियता उसके लिए एक समस्या बनकर रह जाती है ।

गोदान (1936)

नारी शिक्षा की समस्या - प्रेमचंद के अनुसार नारी को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वह पत्नी, माता, गृहिणी के दायित्व को समझ सके । वे नारी को गृह क्षेत्र में, अपने क्षेत्र में उतना ही स्वतंत्र बनाना चाहते हैं, जितना पुरुष अपने क्षेत्र में स्वतंत्र है, और यह तभी संभव हो सकता है, जब उसे इसकी शिक्षा मिले । लेकिन आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षित स्त्री.पुरुष, एक दँसरे के सहयोगी के रूप में

नहीं बल्कि प्रतिद्वंद्वी के रूप में दिखाई देते हैं । नारी अपनी कोमलता, सहिष्णुता और वात्सल्य को भूलकर सब पर शासन करना चाहती है । इससे नारी.शिक्षा का सारा दृष्टिकोण ही गलत माना जा सकता है ।

'गोदान' की मालती इंग्लैंड से डॉक्टरी पढकर आती है । उसके जीवन में भी स्वार्थ, भौतिकसुख और विलासिता दिखाई देती है । मालती पर आधुनिक शिक्षा और सभ्यता के प्रभाव को प्रेमचंद ने इस प्रकार स्पष्ट किया है, "आप नवयुग की साक्षात प्रतिमा है । गात कोमल पर चपलता.कूट.कूट कर भरी हुई । झिझक या संकोच का कहीं नाम नहीं, मेकअप में प्रवीण, बला की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमाद.प्रमोद को जीवन का तत्व समझनेवाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण, जहाँ आत्मा का स्थान है वहाँ प्रदर्शन, जहाँ हृदय का स्थान है, वहाँ हाव.भाव, मनोदगारों पर कठोर निग्रह, जिसमें इच्छा या अभिलाषा का लोप.सा हो गया ।"[7]

इन बातों को प्रेमचंद नारी.शिक्षा में अनावश्यक समझते हैं । शिक्षित युवतियों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण सामाजिक बैंधनों, वैवाहिक जीवन के प्रति जो उपेक्षा निर्माण होती है, उसे नारी स्वभाव के प्रतिकूल मानते हैं । शिक्षित होने पर भारतीय नारियों की यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि, वे अपनी अबला बहनों का प्रतिनिधित्व कर उन्हें शिक्षित बनाए । अपनी संस्कृति की रक्षा कर एक सुंदर भविष्य का निर्माण करें । ऐसी शिक्षित नारी ही समाज का आदर पा सकेगी । मालती शिक्षित है । वह अपनी जिम्मेदारिया निभाने के लिए विवाह करने से विरोध करती है । वह स्वयं माता बनने के बदले देश के गरीब बच्चों की माता बनना चाहती है । यह शिक्षा का उच्चत्तम आदर्श है, लेकिन समाज उसे उसकी स्वच्छंद वृत्ति के कारण पुरुष वर्ग के साथ मिलने–जुलने के कारण उसे चरित्रहीन कहता है । वह आदर्श शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद शिक्षा की समस्या से ग्रस्त दिखाई देती है ।

विधवा विवाह की समस्या – प्रेमचंद ने गोबर और झुनिया का विवाह कर एक नया आदर्श स्थापित किया है । एक विधवा को अपनी इच्छानुसार बर्ताव करने का अधिकार समाज ने हमेशा से उससे छीन लिया है । समाज विधवा के विवाह को सामाजिक समस्या के रूप मं देखता है । विधवा नारी को समाज मनुष्य की श्रेणी से निकालकर उनके साथ पशु जैसा व्यवहार करता है । जो विधवा को न्याय दिलाने की कोशिश करता है, उसके साथ भी समाज द्वारा बुरा बर्ताव किया जाता है।

जब झुनिया गोबर के द्वारा गर्भवती हो जाती है, तब वह गोबर के घर का आश्रय लेती है । होरी और धनिया भी विधवा झुनिया को अपने बहँ के रूप में स्वीकार करते हैं, परंतु समाज इस विवाह को पाप समझता है । इस पाप के सहायक होने की बात कहकर होरी और धनिया को अपमानित कर बिरादरी से बाहर निकाल देते हैं । इस उपन्यास में झुनिया विधवा.विवाह की समस्या से और होरी और धनिया उसकी मदत करने के लिए समाज द्वारा दंडित हो गए हैं ।

संदर्भ सूचि :

1. सेवासदन (1991) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 35
2. प्रेमाश्रम (1981) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 351
3. प्रेमाश्रम (1981) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 309
4. प्रेमाश्रम (1981) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 377
5. निर्मला (1989) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 139, 140
6. गबन(1981) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 61
7. गोदान (1995) : प्रेमचन्द, पृ. क्र. 70

डॉ. मनोज आर. पटेल
आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद , गुजरात.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com